हिंदी

(वसंत) (अध्याय - 9) (जो देखकर भी नहीं देखते)
(कक्षा - 6)
प्रश्न अभ्यास

प्रश्न 1:

'जिन लोगों के पास आँखें हैं, वे सचमुच बहुत कम देखते हैं' हेलेन केलर को ऐसा क्यों लगता था?

उत्तर 1:

हेलेन केलर को ऐसा इसलिए लगता था क्योंकि आँखों वाले लोग प्रकृति की सुंदरता को नजर-अंदाज कर देते हैं। वे आँखे होते हुए भी कम देखते हैं। इस दुनिया के अलग-अलग सुंदर रंग उनकी संवेदना को नहीं छूते। मनुष्य अपनी क्षमताओं का कभी आदर नहीं करता। वह हमेशा उस चीज की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है।

प्रश्न 2:

'प्रकृति का जादू' किसे कहा गया है?

उत्तर 2:

वसंत के दौरान मैं टहनियों में नयी कलियों का खिलना, फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह होना, उनकी घुमावदार बनावट टहनी पर हाथ रखते ही किसी चिड़िया के मधुर स्वर कानों में गूँजने लगना। अपनी अँगुलियों के बीच झरने के पानी को बहते हुए महसूस करना, चीड़ की फैली पत्तियाँ या घास का मैदान किसी भी महँगे कालीन सा लगना, यह सब प्रकृति का जादू ही तो है।

प्रश्न 3:

'कुछ खास तो नहीं' हेलेन की मित्र ने यह जवाब किस मौके पर दिया और यह सुनकर हेलेन को आश्चर्य क्यों नहीं हुआ?

उत्तर 3:

जब हेलेन ने जंगल की सैर करके लौटी अपनी मित्र से पूछा कि जंगल में क्या देखा और वहाँ कैसा लग रहा था? उसका जवाब था कुछ खास तो नहीं। मुझे बहुत अचरज नहीं हुआ क्योंकि मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी थी। मेरा विश्वास है कि जिन लोगों की आँखें होती हैं, वे बहुत कम देखते हैं।

प्रश्न 4:

हेलेन केलर प्रकृति की किन चीजों को छूकर और सुनकर पहचान लेती थीं? पाठ के आधार पर इसका उत्तर लिखो।

उत्तर 4:

हेलेन केलर भोज-पत्र के पेड़ की चिकनी छाल और चीड़ की खुरदरी छाल को स्पर्श से पहचान लेती थी। वसंत के दौरान टहनियों में नयी कलियाँ खोजती थीं। फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने और उनकी घुमावदार बनावट महसूस करने में जो आनंद मिलता था उसे देखकर भी नहीं महसूस किया जा सकता।

प्रश्न 5:

जबकि इस नियामत से जिंदगी को खुशियों के इन्द्रधनुषी रंगों से हरा-भरा किया जा सकता है। तुम्हारी नजर में इसका क्या अर्थ हो सकता है?

उत्तर 5:

इसका यही अर्थ है कि हमें प्रकृति में ही अपने जीवन की खुशियों को ढूंढ़ना चाहिए न कि उससे मुंह मोड़ना चाहिए। इस दुनिया के अलग-अलग सुंदर रंग उनकी संवेदना को नहीं छूते। मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कद्र नहीं करता। वह हमेशा उस वस्तु की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है। यह कितने दुख की बात है कि दृष्टि के आशीर्वाद को लोग एक साधारण-सी चीज समझते हैं, जबकि इस नियामत से जिदगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से हरा-भरा किया जा सकता है।

निबंध से आगे

प्रश्न 1.
आज तुमने घर से आते हुए बारीकी से क्या-क्या देखा-सुना? मित्रों के साथ सामूहिक चर्चा करो।

उत्तर-
आज जब मैं अपने घर से विद्यालय के लिए निकला तो चौराहे पर कुछ लोगों की भीड़ देखी। वे लोग हाथों में समाचार पत्र लिए हुए और किसी गंभीर मसले पर चर्चा कर रहे थे। इतने में मेरी स्कूल बस आ गई। थोड़ी आगे चलकर स्कूल बस भीड़ पर जाम में फँस गई। आगे जाने पर पता चला दुर्घटना हो गई है। एक वाहन उलटा पड़ा था। वहाँ का दृश्य देखकर मन दुखी हो गया। लगभग 15 मिनट बाद में विद्यालय पहुँचा। इसके बाद प्रार्थना में शामिल हुआ, फिर कक्षा में गया। उसके बाद धीरे-धीरे शांति का वातावरण छाया।

प्रश्न 2.
कान से न सुन पाने पर आस-पास की दुनिया कैसी लगती होगी? इस पर टिप्पणी लिखो और कक्षा में पढ़कर सुनाओ।

उत्तर-
कान से न सुन पाने पर दुनिया बड़ी विचित्र लगती है। आँखें तो सब कुछ देखती हैं, पर जब उन क्रिया कलापों की आवाज़ नहीं सुन पाते तब ऐसा प्रतीत होता है मानो बंद कानों से हम मूक फ़िल्मों की तरह देखते हैं। न सुनने के कारण व्यक्ति दूसरों से अपने विचारों का आदान-प्रदान सही रूप में नहीं कर पाता होगा।

प्रश्न 3.
तुम्हें किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने का मौका मिले जिसे दिखाई न देता हो तो तुम उससे सुनकर, सँधकर, चखकर, छूकर अनुभव की जानेवाली चीज़ों के संसार के विषय में क्या-क्या प्रश्न कर सकते हो? लिखो।

उत्तर-
उनके अनुभव जानने के लिए निम्नलिखित प्रश्न कर सकते हैं-

- किसी भी ध्वनि को सुनकर वे कैसे अनुमान लगाते हैं कि ध्वनि किसकी है?
- किसी भी चीज़ को चखकर वे क्या हैं? और कैसा अनुभव करते हैं?
- क्या आप पक्षी की आवाज़ को सुनकर उसका नाम बता सकते हैं? यह कैसे संभव हो पाता है?
- क्या आप सँघकर बता सकते हैं कि यह कौन-सा फूल है?

- सँधकर अच्छी-बुरी चीज़ का अंदाजा किस हद तक लगा पाते हैं?

प्रश्न 4.
हम अपनी पाँचों इंद्रियों में से आँखों का इस्तेमाल सबसे ज्यादा करते हैं। ऐसी चीजों के अहसासों की तालिका बनाओ जो तुम बाकी चार इंद्रियों से महसूस करते हो-

सुनकर	चक्कर	सूँघकर	छूकर

उत्तर-

सुनकर	चखकर	सूँघकर	छूकर
कोयल का मधुर स्वर, कौए की कर्कश आवाज़, माँ की नाराज़गी भरी पुकार, गीत सुनकर गायक की पहचान	सेब या आम की मिठास, अचार की खटास, मिर्च का तीखापन, इमली का चटपटा स्वाद स्वादिष्ट भोजन, कड़वी दवा	फूलों का गंध, पक रहे भोजन की गंध, गैस का रिसाव	बरफ़ की ठंडक,आग की गरमी, कपड़े के प्रकार की जानकारी, शरीर का तापमान

भाषा की बात

प्रश्न 1.
पाठ में स्पर्श से संबंधित कई शब्द आए हैं। नीचे ऐसे कुछ और शब्द दिए गए हैं। बताओ कि किन चीजों का स्पर्श होता है-

1. चिकना .....
2. मुलायम .....
3. खुरदरा .....
4. सख्त .....
5. चिपचिपा .....
6. भुरभुरा .....

उत्तर-

1. चिकना – तेल, घी, क्रीम में चिकनापन होना।
2. मुलायम – रेशमी कपड़ा
3. खुरदरा – लकड़ी व छाल खुरदरे होते हैं।

4. सख्त – लोहा, पत्थर, लकड़ी
5. चिपचिपा – गोंद
6. भुरभुरा – रेत भुरभुरा होता है।

प्रश्न 2.

अगर मुझे इन चीज़ों को छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देखकर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जाएगा। ऊपर रेखांकित संज्ञाएँ क्रमशः किसी भाव और किसी की विशेषता के बारे में बता रही हैं। ऐसी संज्ञाएँ भाववाचक कहलाती हैं। गुण और भाव के अलावा भाववाचक संज्ञाओं का संबंध किसी की दशा और किसी कार्य से भी होता है। भाववाचक संज्ञा की पहचान यह है कि इससे ज़ुड़े शब्दों को हम सिर्फ महसूस कर सकते हैं, देख या छू नहीं सकते। आगे लिखी भाववाचक संज्ञाओं को पढ़ो और समझो। इनमें से कुछ शब्द संज्ञा और क्रिया से बने हैं। उन्हें भी पहचानकर लिखो-

- भोलापन
- मिठास
- बुढ़ापा
- भूख
- घबराहट
- क्रोध
- शांति
- बहाव
- मज़दूरी
- ताज़गी
- अहसास
- मीठा

उत्तर-

भाववाचक संज्ञा	मूलशब्द	संज्ञा/विशेषण/क्रिया
मिठास	मीठा	विशेषण
भूख	भूखा	विशेषण
शांति	शांत	विशेषण
भोलापन	भोला	विशेषण

बुढ़ापा	बूढ़ा	विशेषण
घबराहट	घबराना	क्रिया
बहाव	बहना	क्रिया
फुर्ती	फुर्तीला	विशेषण
ताज़गी	ताज़ा	विशेषण
मज़दूरी	मज़दूर	संज्ञा
अहसास	अहसास	विशेषण

प्रश्न 3.
मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हैं।
उस बगीचे में आम, अमलतास, सेमल आदि तरह-तरह के पेड़ थे।
ऊपर दिए गए दोनों वाक्यों में रेखांकित शब्द देखने में मिलते-जुलते हैं, पर उनके अर्थ भिन्न हैं।
नीचे ऐसे कुछ और शब्द दिए गए हैं। वाक्य बनाकर उनका अर्थ स्पष्ट करो-

- अवधि – अवधी
- में – मैं
- ओर – और
- दिन – दीन
- मेल – मैल
- सिल – शील

उत्तर-

- अवधि – यह प्रश्नपत्र पूरा करने की अवधि 3 घंटे है।
- अवधी – अवध क्षेत्र में अवधी भाषा बोली जोती है।
- में – सुमन से मेरी मुलाकात बगीचे में हुई।
- मैं – मैं दिल्ली का निवासी हूँ।
- मेल – मित्रों को आपस में मेल से रहना चाहिए।
- मैल – इस साबुन से कपड़े में मैल नहीं रहेगी।
- ओर – यह रास्ता मेरे घर की ओर जाता है।
- और – राम और श्याम भाई हैं।
- दिन – आज दिन बड़ा सुहाना है।
- दीन – हमें दीन-दुखियों की सहायता करनी चाहिए।
- सिल – माँ सिल पर मसाला पीस रही है।
- शील – शील स्वभाव के लोग सबको अच्छे लगते हैं।

अनुमान और कल्पना

प्रश्न 1.
इस तसवीर में तुम्हारी पहली नज़र कहाँ जाती है?

उत्तर-
इस तसवीर में मेरी पहली नजर आसमान । से आ रही रोशनी की तरफ जाती हैं।

प्रश्न 2.
गली में क्या-क्या चीजें हैं?

उत्तर-
गली में एक स्कूटर पर बैठा आदमी और साइकिल लेकर खड़ा व्यक्ति दिखाई दे रहा है। गली के एक ओर कुछ दुकानें हैं। दुकान की तरफ मुँह करके एक व्यक्ति खड़ा है। दुकानों की ऊपर की मंजिल की बालकनी से। कपड़े लटक रहे हैं। गली की दूसरी ओर कुछ साइकिलें और मोटर साइकिल खड़ी है, एक ऑटोरिक्शा भी खड़ा है।

प्रश्न 3.
इस गली में हमें कौन-कौन सी आवाजें सुनाई देती होंगी?
सुबह के वक्त
दोपहर के वक्त
शाम के वक्त
रात के वक्त

उत्तर-

- सुबह के वक्त गली में साइकिल की घंटियों, मंदिर के लाउडस्पीकरों, स्कूटर और ऑटोरिक्शा, दूधवाले तथा फेरीवालों की ध्वनियाँ सुनाई देती होंगी।
- दोपहर के वक्त फेरीवालों, ठेलेवालों और कबाड़ीवालों तथा स्कूल से वापस आते बच्चों की आवाज आती होगी।
- शाम के वक्त साइकिल की घंटियों, वाहनों का शोर, रेडियो पर बजते गानों, बच्चों के | खेलने की आवाजें और लोगों की बातचीत की आवाज भी आती होगी।
- रात के वक्त आते-जाते लोगों के कदमों की आवाज, कुत्तों के भौंकने की आवाज, चौकीदार के 'जागते रहो' और पुलिस गाड़ी के सायरन की आवाज आती होगी।

प्रश्न 4.
अलग-अलग समय में ये गली कैसे बदलती होगी?

उत्तर-
अलग-अलग समय में गली तो वही रहती होगी, बस वहाँ आने-जाने और रुकने वाले लोग बदलते होंगे। सुबह और शाम के समय वहाँ हलचल रहती होगी तथा दोपहर और शाम में शांति छाई रहती होगी।

प्रश्न 5.
ये तारें गली को कहाँ-कहाँ जोड़ती होंगी?

उत्तर-
बिजली की तारें गली को ट्रान्सफॉर्मर से जोड़ती होंगी। टेलीफोन की तारें दूर स्थित मुख्य दूरभाष बक्से से जुड़ी होंगी। केबल की तारें किसी टी.वी. टावर से जुड़ी होंगी।

प्रश्न 6.
साइकिलवाला कहाँ से आकर कहाँ जा रहा होगा?

उत्तर-
साइकिलवाला घर से आकर कार्यालय जा रहा होगा।

कुछ करने को

- हेलेन केलर तथा लूई ब्रेल की जीवनी लिखो।
- किसी अपंग व्यक्ति की पढ़ाई-लिखाई में उसकी मदद करो।

सुनना और देखना

- एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा निर्मित श्रव्य कार्यक्रम 'हेलेन केलर'।
- सई परांजपे द्वारा निर्देशित फ़ीचर फ़िल्म 'स्पर्श'।